'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' - उक्ति की समीक्षा (1)

Mukesh Kumar Mishra

सम्पूर्ण काव्य-जगत् को अपनी विशाल प्रतिभा से सर्वदा चमत्कृत करनेवाले सारस्वत वैभवसम्पन्न महाकवियों की विशाल परम्परा में 'कादम्बरी' और 'हर्षचरित' के सुविख्यात प्रणेता असाधारण प्रतिभासम्पन्न महाकवि बाणभट्ट भी एक हैं। यूँ तो संस्कृत में गद्यलेखन कवियों की प्रतिभा का एक मापदण्ड अर्थात् निकष माना जाता है - गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति। बाणभट्ट इस निकष पर सर्वाधिक सफल हैं। बाण के गद्य की निकषता इस बात में निहित है कि कवि अपनी स्वच्छन्द भावना को किस रूप में परिमित शब्द और अर्थराशि में समेट पाता है, सचमुच काव्य की कसौटी गद्य होने के कारण संस्कृत में विरल गद्यकाव्य मिलते हैं, जिनमें बाणभट्ट अग्रणी हैं। गद्यों की परम्परा के समानान्तर अनेक काव्य भी प्रणीत हुए। एक से बढ़कर एक सुन्दर एवं मधुर काव्यों की रचना हुई। परन्तु कविकल्पना की बहुलता, भाव-प्रवणता, गुण, रस, अलङ्कारादि विभिन्न काव्याङ्गों की समायोजना इस दक्षता के साथ महाकवि बाणभट्ट ने अपने 'कादम्बरी' और 'हर्षचरित' में की है कि वह अन्य कवियों के लिए स्पृहा की वस्तु बनकर रह गई है।

महाकवि बाणभट्ट विचार और चिन्तन की नवीन विभाओं का आविष्कार करते थे। प्राचीन परिपाटी को नवीन साज-सज्जा से आभूषित करके उसे सर्वथा नवीन बना देते थे। शास्त्रों के सुन्दर प्रसङ्गों को अपनी वर्णना से संयोजित कर अपनी कविताकामिनी को मण्डित करते थे। अद्भुत कल्पनाशक्ति, भाषा-भंगिमा और औचित्य को पहचानने की दिव्यदृष्टि उनमें थी। यही कारण है कि बाण का अमर साहित्य युगों से सहृदयों को सम्पृक्त और आकृष्ट करता रहा है।

बाण की ऐसी कल्पनाओं की ओर दृष्टिपात करते हुए समीक्षक समुदाय में 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' - यह उक्ति प्रसिद्ध हो गई है। जिस सुधी समीक्षक ने यह विचार

प्रस्तुत किया होगा, निश्चित रूप से वह संस्कृत साहित्य के विशाल भण्डार से परिचित रहा होगा और उसने परवर्ती साहित्य पर बाण के व्यापक प्रभाव का दर्शन किया होगा। प्रस्तुत उक्ति का अर्थ है कि बाण के द्वारा सम्पूर्ण परवर्ती कल्पनामय साहित्य जगत् उच्छिष्ट है अर्थात् बाण के अनन्तर होनेवाले कवियों की रचनाएँ सर्वथा नवीन नहीं हैं, बल्कि वे रचनाएँ अलंकार भाव, भाषा गुण आदि की दृष्टि से बाणभट्ट के उच्छिष्ट हैं। यह यथार्थतः सत्य है कि बाणभट्ट ने जिन उपलब्धियों से संस्कृत साहित्य के विशाल भण्डार को भरा है, उन्हीं के आधार पर अनेक परवर्ती कवियों ने भी संस्कृत साहित्य के विशाल भण्डार को भरा है अथवा भरने का प्रयास किया है। परवर्ती कवियों की रचनाओं में बाण की कल्पनाओं, भावरेखाओं, चिन्तनपद्धतियों, काव्यसौष्ठव की विधाओं आदि का प्रतिबिम्बन परिलक्षित होते हैं। बाणभट्ट संस्कृत साहित्य के ऐसे मनीषी कवि हैं जिनकी प्रतिभा से कविमण्डल प्रभावित है और जिनकी अलौकिक अभिव्यञ्जनाओं की चर्चा दर्शनीय है। कविवर बाण धन्य हैं जिन्होंने अनेक कवियों का उपकार किया है। धर्मदास ने बाण की वाणी की उपमा नित नवीन तरुणी से दी है-

रुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरति।
सा किं तरुणि! नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य॥

जयदेव ने बाणभट्ट को कवितावनिता के हृदयमन्दिर में निवास करनेवाला साक्षात् कामदेव कहा है -

हृदयवसति पञ्चबाणस्तु बाणः

गोवर्धनाचार्य ने बाणभट्ट को साक्षात् सरस्वती का अवतार कहा है -

जाताशिखण्डिनी प्राक् यथा शिखण्डी तथावगच्छामि।
प्रागल्भ्यमधिकमापुं वाणी बाणो बभूव हि॥

साहित्यिक दृष्टि से अनुसन्धान करने पर ज्ञात होता है कि महाकवि रमणीय प्रणय-चित्रण, नखशिख वर्णन तथा प्रकृति के मनोहारी चित्रण में निष्णात हैं। उनके प्रणय-चित्रण में सम्भोग और विप्रलम्भ दोनों प्रकार के भावों का सफल निरूपण हुआ है। कवि ने महाश्वेता और कादम्बरी के

विरह वर्णन में अद्वितीय कला का प्रदर्शन किया है। नखशिखवर्णन के क्षेत्र में उन्होंने केवल स्त्रियों के नखशिख का वर्णन ही नहीं अपितु पुरुषाकृति के सौन्दर्याङ्कन में भी अनुपम कला का प्रदर्शन किया है। वस्तुतः बाणभट्ट निर्जीव कल्पना को भी सजीव करने में विशारद हैं। उनका स्निग्ध पात्रपरिचय, प्रकृति वर्णन तथा अलंकारों का प्रयोग दर्शनीय है। साहित्यिक सौन्दर्य की दृष्टि से कवि ने प्रायः समस्त अलङ्कारों का प्रयोग किया है, फिर भी उपमा, उत्प्रेक्षा और श्लेष कवि का सर्वाधिक प्रिय अलङ्कार रहा है। उनकी भाषा सदैव भावानुगामिनी बन गई है। आलोचकों ने तो यहाँ तक कह डाला है कि बाण की कविता का आस्वाद जिन्हें लग गया है उनके लिए अन्य कवियों के काव्य ~~च~~ चपलता ही हैं -

हृदि लग्नेन बाणेन यन्मदोऽपि पदक्रमः।
गर्वेत्कविकुरङ्गाणां चापलं तत्र कारणम्॥

त्रिलोचन कवि की यह मान्यता प्रशंसनीय है। यद्यपि कवि की रचनाशैली पाञ्चाली है तथापि वर्ण्य-विषय के अनुकूल कवि ने वैदर्भी और गौड़ी का प्रयोग एवं तीनों का समन्वय अपने काव्य में किया है। उनका गद्य अर्थगौरव, स्वभावोक्ति, रसपरिपाक और ओजोगुणगुम्फित है। वर्णनशैली हृदय-अनुबंध, मधुर, कोमल, प्रौढ़, रसभावप्रधान और अलंकृत है।

परवर्ती कवियों पर बाण का प्रभाव दिखाई पड़ता है। यथा- अभिनन्द ने अपनी कृति कादम्बरी-कथासार में कादम्बरी का संक्षेप ही प्रस्तुत किया है। नलचम्पू प्रणेता त्रिविक्रमभट्ट ने भी अनेक स्थलों पर बाण की पदयोजनाओं और कल्पनाओं का प्रयोग किया है। केवल संस्कृत साहित्य में ही नहीं, अपितु हिन्दी साहित्य के महान् कवि केशवदास तथा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी भी बाण से पूर्ण प्रभावित हैं।

इस प्रकार हम पाते हैं कि परवर्ती कवियों ने काव्य-रचना के लिए बाणभट्ट द्वारा स्वीकृत विधाओं तथा अनेक काव्याङ्गों का अनुकरण किया है, परन्तु जो वैशिष्ट्य बाण के काव्यों में पाया जाता है वह अन्य कवियों की रचनाओं में नहीं मिलता है अर्थात् सर्वथा नवीन कल्पनाएँ नहीं देखी जाती हैं। अतः बाण के परवर्ती कल्पनामय साहित्यिक जगत् बाणोच्छिष्ट ही है, नवीन नहीं है। अतः मेरी दृष्टि में 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' उक्ति सर्वथा सार्थक है।

लक्ष्मी का स्वरूप

Mukesh Kumar Mishra

कादम्बरी संस्कृत-साहित्यकी ही नहीं, विश्वसाहित्य की अमरकृतियों व कथाओं में सर्वश्रेष्ठ कृति और कथा मानी जाती है। यह महाकवि बाणभट्ट की प्रतिभा का चूड़ान्त निदर्शन है। कादम्बरी-कथा का एक सर्वोत्कृष्ट अंश शुकनासोपदेश है। कवि की उदात्त कल्पना, सहज, स्वाभाविक आधिपत्यपूर्ण रचनाशैली की दृष्टि से यह अनुपम है। प्रसादगुणयुक्त, मृदु, रुचिर, कोमल एवं प्रायः वैदर्भी रीतियुक्त गद्यशैली में उपनिबद्ध शुकनास का उपदेश सम्पूर्ण काव्य में प्राणवत्ता का संचार करता है। यहाँ कवि ने कान्तासम्मित उपदेश का आश्रय लिया है। राजतन्त्रमूलक व्यवस्था से सम्बद्ध होने के कारण शुकनासोपदेश सांसारिक राजसभाओं के जीवन का यथार्थ अनुभव व चित्रण प्रस्तुत करता है, अतः इस ग्रन्थ के माध्यम से राजाओं, मंत्रियों, युवराजों आदि को उपदिष्ट करने का यत्न किया गया है। आज की प्रजातान्त्रिक व्यवस्था में तो ऐसे उपदेशों की सर्वाधिक उपादेयता है। यहाँ युवराज के पद पर शीघ्र अभिषिक्त होनेवाला शास्त्रमर्मज्ञ राजकुमार चन्द्रापीड प्रत्येक युग के उस युवावर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, जिनके पास अभिनव-यौवन, धन-सम्पत्ति, प्रभुत्व और विवेक की परिपूर्णता व सम्पन्नता है। इसी तरह राजगुरु शुकनास प्रत्येक युग के गुरुत्व-पद को प्रतिबिम्बित करनेवाले आचार्यों का प्रतिनिधित्व करता है, जिनके गुरुत्व में गुरुत्वाकर्षण-बल है। राजकुमार चन्द्रापीड को दिये गये उनके उपदेश प्रत्येक देश व काल के लिये सर्वथा व्यावहारिक है। विद्वानों के अनुसार

जो स्थान 'महाभारत' में 'गीता' का है, वही स्थान 'कादम्बरी' में 'शुकनासोपदेश' का है। 'शुकनासोपदेश' में महाराजा तारापीड के सर्वशास्त्रज्ञ, परम विनीत और शीघ्र युवराज के पद पर अभिषिक्त होनेवाले पुत्र को और अधिक नम्र बनाने के उद्देश्य से महामन्त्री शुकनास के द्वारा दिया गया उपदेश ही शुकनासोपदेश कहलाता है। उपदेश-क्रम में महामन्त्री ने युवराज के समक्ष युवावस्था का प्रभाव, लक्ष्मी का स्वरूप, गुरूपदेश का महत्त्व एवं राजाओं का चरित्र आदि विषय पर प्रकाश डाला है।

लक्ष्मी का स्वरूप एवं उसके विविध पक्षों का विवेचन करते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि वाग्देवी साक्षात् बाणभट्ट की जिह्वा पर उतर आयी है। उपदेश देते हुये शुकनास कहते हैं कि लक्ष्मी का मद और उसके प्रति आसक्ति वृद्धावस्था में भी शान्त नहीं होनेवाला होने से अत्यन्त भीषण होता है। व्यक्ति लक्ष्मी के मद के कारण विवेकशून्य हो जाता है। ऐश्वर्य का मद लोगों को अन्धा कर देता है। सत्य-असत्य का परीक्षण कर सही निर्णय करने की क्षमता समाप्त हो जाती है - "अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः। कष्टमनञ्जनवर्तिसाध्यमपरमैश्वर्यतिमिरान्धत्वम्।"

शुकनास ने इसे अनर्थों की महान् शृङ्खला की उत्पादिका कहा है। लक्ष्मी के अन्तर्भूत गुणों पर प्रकाश डालते हुए शुकनास कहते हैं कि यह लक्ष्मी केवल वीर पुरुषों का वरण करती है तथा वीर योद्धाओं के खड्गमण्डल (तलवार-समूह) में विचरण करती है। बहुत समय तक समुद्र में रहने तथा समुद्र-मन्थन के परिणामस्वरूप प्रादुर्भूत चौदह बहुमूल्य रत्नों में यह परिगणित है एवं कई रत्नों के गुणों से यह आप्लावित है। जैसे कि-यह परिजात-पल्लवों (कल्पवृक्ष के पल्लवों) से राग, चन्द्रखण्ड से वक्रता, उच्चैःश्रवा से चञ्चलता, विष से सम्मोहन-शक्ति, मदिरा से मद,

कौस्तुभ मणि से कठोरता आदि विविध गुणों को अपने में समाहित किये हुये है तथा इन्हीं गुणों के अनुरूप यह अपने स्वरूप को भी प्रकट करती है, जो इसके मनोविनोद के चिह्न हैं -

"आलोकयतु तावत् कल्याणाभिनिवेशी लक्ष्मीमेव प्रथमम्। ईर्ष्यं हि सुभटखड्गमण्डलोत्पलवनविभ्रमभ्रमरी लक्ष्मीः क्षीरसागरात् - पारिजातपल्लवेभ्यो रागम्, इन्दु ..... गृहीत्वैवोद्गता।"

शुकनास कहते हैं कि दुष्ट-प्रकृतिवाली यह लक्ष्मी अत्यन्त चञ्चला, चलायमाना और निःस्पृहगुणयुक्ता है। यह अपरिचित स्वभाववाली है। इसकी प्राप्ति बहुत कठिनाई से होती है। प्राप्त होने पर भी कष्टों से संभाली जाती है। दृढ़ पाशों से बाँधने पर भी यह निकल भागती है - "दृढगुणपाशासन्दाननिष्पन्दीकृतापि नश्यति।" महामन्त्री कहते हैं कि प्रतिक्षण अपनी तलवार को उठाये हुये तत्पर हजारों वीर योद्धाओं से रक्षित यह लक्ष्मी हजारों तलवारों रूपी सींखचों से निर्मित पिंजरे से भी निकल भागती है। शुकनास कहते हैं कि यह स्वेच्छाचारिणी दुष्टा लक्ष्मी न तो किसी के साथ जान-पहचान करती है, न परिचय का सम्मान और उसकी रक्षा करती है, न यह कुलीनता, सौन्दर्य, चरित्रादि को देखती है, न किसी के कुलशीलादि का विचार करती है। यह पाण्डित्य का भी सम्मान नहीं करती है। न यह शास्त्रज्ञान को सुनती है, न धर्म का अवलम्बन करती है। इसी तरह सदाचार, विशिष्ट ज्ञान, सत्य, भाग्यादि को भी यह नहीं मानती है और न ही इसका सम्मान या अनुसरण करती है। गन्धर्वनगर की रेखा के समान यह आँखों के सामने गायब हो जाती है -

"न परिचयं रक्षति। नाभिजनमभीक्षते। न रूपमालोकयते। न कुलक्रममनुवर्तते। न शीलं पश्यति। ..... पश्यत एव नश्यति।"

भ्रान्ति के संस्कार से युक्त यह भ्रमणशीला लक्ष्मी कहीं भी स्थिरता से पैर नहीं रखती है।

राजाओं के द्वारा प्रयत्नपूर्वक रखी जाने पर भी इधर-उधर चली जाती है। यह कठोर और क्रूर प्रकृतिवाली है। ऐसा प्रतीत होता है कि इसने अपने विविध मायवी रूप दिखाने के लिये ही विराट् रूप विष्णु का आश्रय लिया है। इसका कोई स्थायी वास नहीं है। गंगा की लहरों और बुलबुलों के समान यह चंचला है तथा नीच और मूर्ख पुरुषों का आश्रय लेती है। यह तमोगुण बहुला है - "गङ्गेव वसुजनन्यपि तरङ्गबुद्बुदचञ्चला। ....
.... पातालगुहेव तमोबहुला।"

विभिन्न राशियों में संचरण करनेवाले सूर्य के समान यह लक्ष्मी विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों के पास विचरण करती है। दुष्ट-पिशाचिनी की तरह यह कुछ लोगों को धनी बनाकर अल्प बुद्धिवाले व्यक्ति को उन्मत्त कर देती है। गुणों का निरादरकरनेवाली यह लक्ष्मी सरस्वती के उपासकों से दूर रहती है। उदारहृदय व्यक्ति को यह अशुभ एवं सज्जन पुरुष को अपशकुन समझती है। कुलीन व्यक्ति को सर्प के समान लाँघ जाती है, शूरवीर को कण्टक के समान दूरसे ही छोड़ देती है।

शुकनास कहते हैं कि लक्ष्मी ने संसार में अपने विरोधी चरित्र का एक जाल सा फैला दिया है। उसका स्वरूप अनेक विरोधाभासी गुणों से युक्त है। जैसे, निरन्तर उष्मा अर्थात् दर्प को उत्पन्न करती हुई भी जड़ता अर्थात् मूर्खता को उत्पन्न करती है। उन्नति अर्थात् समृद्धि को दिखाती हुई भी नीच-स्वभाव को प्रकट करती है। जल से उत्पन्न होकर भी तृष्णा को बढ़ाती है। उन्नत होकर भी स्वभाव में नीचता लाती है। ऐश्वर्य को धारण करती हुई भी अमंगलकारी स्वभाव का प्रसार करती है। अमृत की बहन होकर भी कड़वा फल देती है। शरीरधारिणी

होती हुई भी अदृश्य-रूपवाली है। विष्णु की प्रिया होते हुए भी (8)
दुष्टों के प्रति अनुरक्ता है - "अमृतसहोदरापि कटुविपाका।
विग्रहवत्यपि अप्रत्यक्षदर्शना। पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया।"

यह लक्ष्मी स्वच्छ व निर्मल वस्तुओं को भी कलुषित व अपवित्र कर देती है। यह चञ्चला ज्यों-ज्यों अधिक दीप्त होती है, त्यों-त्यों दीपशिखा की भाँति इससे काजल के समान मलिन कर्म ही निकलता है। यह शास्त्र-चक्षु के लिये रतौंधी है, शिष्टाचार को दूर हटाने के लिये बेंत की छड़ी है और धर्मरूपी चन्द्रमा को ग्रसने के लिये राहु की जिह्वा है। छलरूपी नाटक की यह प्रस्तावना है। यह काम-दोष को जागरित करनेवाली है, कल्याणकारी भावनाओं की वधशाला है, धर्म का नाश करनेवाली है, ठग-विद्या में निपुणा है, छल-कपट विद्या की अधिष्ठात्री है। यह दुराचारों की अग्रपताका है, विषयरूपी मद्य की पानभूमि है, दोषरूपी सर्पों के निवास की गुफा है अर्थात् निवास-स्थली है, अनेक प्रकार की कुप्रवृत्तियों को जन्म देनेवाली है, लोकनिंदा रूपी फोड़ों का विस्तार करनेवाली भूमि है। शुकनास जोर देकर कहते हैं कि इस पृथ्वी पर किसी ऐसे व्यक्ति को मैं नहीं पाता हूँ जिसका इस अपरिचिता नवेली ने कसकर आलिङ्गन न किया हो और अपना प्रियपात्र बनाकर न उसे न छोड़ दिया हो। वे कहते हैं कि यह दुराचारिणी लक्ष्मी दैववश राजाओं का परिग्रहपूर्वक परित्याग करके उन्हें भी दुःखी बना देती है। लक्ष्मी के कुप्रभाव में आकर राजा व समृद्धशाली व्यक्ति अनेक प्रकार के अविनयों के अधिष्ठान बन जाते हैं। लक्ष्मी के प्रभाव में आकर उसके विषय में सोचने और सुनने मात्र से भी व्यक्ति विनाश के गर्त फँस जाता है।

इस प्रकार बाणभट्ट ने शुकनास के माध्यम से विशेषकर तमोगुण एवं रजोगुण की वाहिका व जन्मजात चञ्चला लक्ष्मी के स्वरूप के विविध पक्षों को उद्घाटित किया है और उपदिष्ट किया है कि न केवल

· राजाओं व राजकुमारों को, बल्कि सामान्य जनों को भी लक्ष्मी के
· इस तामसिक एवं राजसिक प्रवृत्ति पर अंकुश रखना चाहिये, लक्ष्मी-मद के प्रभाव पर नियन्त्रण स्थापित करना चाहिये। ऐसा नहीं होने पर या ऐसा नहीं किये जाने पर न केवल सत्ता या ऐश्वर्य सुख का उपभोग करनेवालों के लिये, बल्कि देश, समाज व परिवार के लिये भी इसका फल या परिणाम अनिष्टकारी और दुःखदायी होता है। अतः लक्ष्मी का स्वरूपविषयक शुकनास का यह उपदेश या विवेचन किसी देश, काल, शासन व व्यक्तिविशेष से सम्बद्ध न होकर प्रत्येक देश, काल, शासन व व्यक्ति से सम्बद्ध है।

Mukesh Kumar Mishra.